Semester-1 MAC 2025-2029.

James Lange Theory - सन् 1884 में प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक (William James) विलियम जेम्स ने अपना संवेग का सिद्धांत प्रतिपादित सन् 1885 में डेनमार्क के दैहिक मनोवैज्ञानिक लांज ने अपना स्वतंत्र रूप से संवेग सिद्धान्त एक ही सिद्धान्त जेम्स-लांज सिद्धान्त को नाम है। शारीरिक परिवर्तन उद्दीपक प्रत्यक्ष के तुरन्त बाद होते हैं। परिवर्तन घटित होते हैं उसी रूप में उनकी अनुभूति संवेग है। सामान्य लोग प्रायः कहते हैं हम अपनी सम्पत्ति खोते हैं हमें शोक होता है हम रोते हैं। जब हम सिंह को देखते हैं भयभीत होते हैं और भागते हैं। अपमानित होते हैं क्रोधित होते हैं और आक्रमण करते हैं तर्कसंगत कथन यह है कि हमें शोक होता है हम क्रोधित होते हैं क्योंकि हम आक्रमण करते हैं हम भयभीत होते हैं। हम काँपते हैं। शारीरिक क्रियाओं को ही संवेग का कारण माना है। हमारे हर्षों और विषादों के लिए हमारे आनन्दों और दुःखावस्थाओं के लिए हमारे मानसिक जीवन के सम्पूर्ण संवेगात्मक पहलू के लिए वाहिनी प्रेरक संस्थान (vaso motor system) उत्तरदायी है। जेम्स लांज के सिद्धान्त के अनुसार पहले परिस्थिति का प्रत्यक्ष होने से शरीर में कई प्रकार के आन्तरिक परिवर्तन होते हैं। और इन परिवर्तनों के ज्ञान से संवेग का अनुभव होता है। अतः इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संवेग शारीरिक संवेदनाओं का प्रतिमान है। बाहरी उत्तेजना एक या दो से अधिक ग्राहकों को उत्तेजित करती है। उत्तेजना की संवेदना ज्ञानात्मक स्नायु प्रवाह से वृहद् मस्तिष्क तक पहुँचती है।

Scanned with OKEN Scanner

उत्तेजना विशेष का भान होता है। इसके बाद स्नायु-प्रवाह मांसपेशियों तथा जठर में आ जाता है। मांसपेशियों तथा जठर के उत्तेजित हो जाने से उनके अन्दर से आगामी स्नायु-प्रवाह फिर उत्तेजना के मस्तिष्क तक पहुँचने से संवेग की अनुभूति होती है। इस प्रक्रिया को समझा जा सकता है। जेम्स लांग के सिद्धान्त के पक्ष में निम्न हैं।

(i) आंगिक अभिव्यक्ति से रहित किसी संवेग की कल्पना नहीं की जा सकती है। संवेग की कल्पना करें और तब अपनी चेतना से उसकी शारीरिक अनुभूतियों के सब लक्षणों को हटाने की चेष्टा करें तो हम कोई ऐसी वस्तु नहीं पाते, जिससे संवेग बन सके तथा जो कुछ भी बाकी बचता है। यह केवल प्रत्यक्ष की अनुभूति मूलक तटस्थ अवस्था है।

(ii) वस्तु का प्रत्यक्ष संवेग को जाग्रत किये बिना तुरन्त आंगिक परिवर्तन उत्पन्न करता है। हम जंगल में एक काली चलती-फिरती है। वस्तु के प्रत्यक्ष और आंगिक क्रियाओं के बीच कोई संवेग नहीं है।

(iii) संवेग को प्रकट न होने दिया जाये तो उसका अन्त हो जाता है। जब कोई व्यक्ति दुःखी के कारण रोता है तब उसका रोना बन्द करने या उसको हँसाने की चेष्टा की जाती है। रोने की क्रिया बन्द हो जाने से उसका दुःख दूर हो जायेगा या हँसने से वह प्रसन्न हो जायेगा और बहुधा होता भी ऐसा ही है।

(iv) जेम्स ने नाटक और सिनेमा के पात्रों का उदाहरण देते हुए कहा है कि वे अभिनय करते समय क्रोध, भय आदि संवेगों की आंगिक अभिव्यक्ति करने से उन संवेगों का अनुभव करने लगते हैं। मद्य तथा अन्य उत्तेजक दवाओं के सेवन से विभिन्न आंगिक दशाओं के उत्पन्न होने से विभिन्न संवेगों का अनुभव होने लगता है।

Teacher's Signature PKg 15/10/2025